3 सूरदास

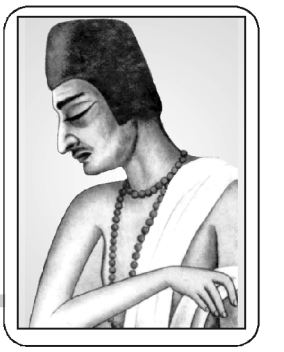

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—संवत् 1535 वि0 (सन् 1478 ई0)।
- **जन्म-स्थान**—रुनकता अथवा सीही।
- **पिता का नाम**—पण्डित रामदास सारस्वत।
- **गुरु**—आचार्य वल्लभाचार्य।
- **भक्ति**—कृष्णभक्ति।
- **ब्रह्म का रूप**—सगुण।
- **निवास स्थान**—श्रीनाथ मंदिर।
- **प्रमुख रस**—शृंगार एवं वात्सल्य।
- **प्रमुख रचनाएँ**—सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी।
- **मृत्यु**—संवत् 1640 वि0 (सन् 1583 ई0)।
- **साहित्य में स्थान**—वात्सल्य रस के सम्राट।

कृष्ण-भक्ति शाखा के कवियों में अष्टछाप के कवि ही प्रधान हैं और उनमें भी श्रेष्ठतम कवि हिन्दी साहित्य के सूर्य सूरदास जी हैं। हिन्दी साहित्य के अन्य कवियों की भाँति सूर की जन्मतिथि भी सन्दिग्ध है। सूर का जीवन-वृत्त अभी तक शोध का कार्य बना हुआ है। अनेक साक्ष्यों के अवलोकन के उपरान्त सूरदास का जन्म सं0 1535 वि0 (सन् 1478 ई0) में बैसाख शुक्ल पक्ष पंचमी गुरुवार को मानना उपयुक्त जान पड़ता है। कुछ विद्वान् सूर का जन्म-स्थान सीही मानते हैं, तो बहुतेरे रुनकता। 'आईने अकबरी' के आधार पर इनके पिता का नाम रामदास था। इनके जन्म एवं स्थान आदि को पद्य में एक साथ इस प्रकार समेटा जा सकता है—

रामदास सुत सूरदास ने, जन्म रुनकता में पाया।
गुरु वल्लभ उपदेश ग्रहण कर, कृष्णभक्ति सागर लहराया॥

कहा जाता है कि सूर जन्मान्ध थे। **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** ने भी इन्हें जन्मान्ध बताया है—*"वह इस असार संसार को न देखने के वास्ते आँखें बन्द किये थे।"* भगवद्-भक्ति की इच्छा से सूर अपने पिता की अनुमति प्राप्त कर यमुना के तट गऊघाट पर रहने लगे। वृन्दावन की तीर्थयात्रा पर जाते हुए इनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई, जिनसे सूरदास ने दीक्षा ली। महाप्रभु इन्हें अपने साथ ले गये और गोवर्धन पर स्थापित मन्दिर में अपने आराध्य श्रीनाथजी की सेवा में कीर्त्तन करने को नियुक्त किया। सूर नित्य नया पद बनाकर और इकतारे पर गाकर भगवान् की स्तुति करते थे। कहा जाता है कि इन्होंने सवा लाख पद रचे, जिनमें से लगभग दस सहस्र ही अब तक उपलब्ध हो सके हैं, परन्तु यह संख्या भी इन्हें हिन्दी का श्रेष्ठ महाकवि सिद्ध करने में पर्याप्त है। सूरदास जी को अपने अन्तिम समय का आभास हो गया था। एक दिन ये श्रीनाथ जी के मन्दिर में आरती करके पारसौली चले गये और वहीं पर सं0 1640 वि0 (सन् 1583 ई0) में इनकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी।

सूरदास के पदों का संग्रह '**सूरसागर**' है। '**साहित्यलहरी**' इनका दूसरा प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ है। सूरदास द्वारा रचित '**सूर सारावली**', '**गोवर्धन लीला**', '**नाग लीला**', '**पद संग्रह**', '**सूर पच्चीसी**' आदि ग्रन्थ भी प्रकाश में आये हैं। परन्तु 'सूरसागर' से ही ये जगत्-विख्यात हुए हैं। 'सूरसागर' के वर्ण्य-विषय का आधार 'श्रीमद्भागवत' है। फिर भी इनके साहित्य में अपनी मौलिक उद्भावनाएँ हैं। सूर ने भागवत के कथा-चित्रों में न केवल सरसता तथा मधुरता का संचार किया है, अपितु अनेक नवीन प्रकरणों का सृजन भी किया है। राधा-कृष्ण के प्रेम को लेकर सूर ने जो रस का समुद्र उमड़ाया है, इसी से इनकी रचना का नाम सूरसागर सार्थक होता है।

शृंगार के ये अप्रतिम कवि हैं। इनके अतिरिक्त किसी अन्य कवि ने शृंगार के दोनों विभागों–संयोग एवं विप्रलम्भ का इतना उत्कृष्ट वर्णन नहीं किया। इनका बाल-वर्णन बाल्यावस्था की चित्ताकर्षक झाँकियाँ प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के पदों में उल्लास, उत्कण्ठा, चिन्ता, ईर्ष्या आदि भावों की जो अभिव्यक्ति हुई है वह बड़ी स्वाभाविक, मनोवैज्ञानिक तथा हृदयग्राही है। भ्रमर-गीत सूरदास की अनूठी-कल्पना है। इसमें इन्होंने ज्ञान और योग के आडम्बर को दूर कर प्रेम और भक्ति के महत्त्व को प्रकाशित किया है।

ब्रजभाषा सूर के हाथों से जिस सौष्ठव के साथ ढली है, वैसा सौन्दर्य उसे बिरले ही कवि दे सके। सूर वात्सल्य रस के सम्राट् माने जाते हैं। जन्म से लेकर किशोरावस्था तक कृष्ण का चरित्र-चित्रण तो 'स्वर्ग को भी ईर्ष्यालु' बनाने की क्षमता रखता है। बाललीलाओं, गोचारण, वन से प्रत्यागमन, माखन-चोरी आदि का अत्यन्त मनोहारी चित्रण सूर के पदों में प्राप्त होता है। विरह-सागर इनके पदों में इस प्रकार उमड़ पड़ा है कि ज्ञान उस अतल में लापता हो गया है। इनके काव्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, प्रतीप, व्यतिरेक, रूपक, दृष्टान्त आदि अलंकारों का प्रचुर प्रयोग हुआ है।

महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने चार शिष्य अपने पिता के और चार अपने शिष्यों को मिलाकर आठ बड़े भक्त–कवियों का 'अष्टछाप' बनाया था। सूर उन कवियों में अग्रगण्य हैं। वास्तव में कृष्ण-भक्त कवियों में सूर की रचना श्रीमद्भागवत जैसा सम्मानित स्थान पाती रहेगी। शब्दों द्वारा अपने चरित्र-नायक की माधुर्यमयी मूर्ति को पाठकों के नयनों के सम्मुख उपस्थित करने में सूर की सफलता अद्वितीय है। सूर ने तत्कालीन परिस्थितियों से खिन्न समाज का मन भगवान् की हँसती-खेलती, लोकरंजक मूर्ति दिखाकर बहलाया और इस प्रकार आगे चलकर भगवान् के लोकरक्षक स्वरूप की प्रतिष्ठा हेतु बड़ी ही अच्छी पृष्ठभूमि उपस्थित की। सूर भक्त कवि थे और इनकी भक्ति सखा-भाव की थी। इन्होंने अपने इष्टदेव के परम रमणीय रूप तथा लीला के वर्णन में जो कुछ कहा है उसकी स्वाभाविकता, सरलता, तल्लीनता आदि इतनी बढ़ी-चढ़ी है कि हिन्दी साहित्य में इस विषय में कोई भी कवि इनके समकक्ष नहीं है।

●●●

विनय

अब कैं राखि लेहु भगवान।
हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान।
ताकैं डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान।
दुहूँ भाँति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान?
सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान।
सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय-जय कृपानिधान।।1।।

मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।।
जैसैं उड़ि जहाज कौ पच्छी, फिरि जहाज पर आवै।
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै।
परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।2।।

वात्सल्य

हरि जू की बाल-छबि कहौं बरनि।
सकल सुख की सींव, कोटि-मनोज-सोभा-हरनि।
भुज भुजंग, सरोज नैननि, बदन बिधु जित लरनि।
रहे बिवरनि, सलिल, नभ, उपमा अपर दुरि डरनि।
मंजु मेचक मृदुल तनु, अनुहरत भूषन भरनि।
मनहुँ सुभग सिंगार-सिसु-तरु, फर्‌यौ अद्‌भुत फरनि।
चलत पद-प्रतिबिम्ब मनि आँगन घुटुरुवनि करनि।
जलज-संपुट-सुभग-छबि भरि लेति उर जनु धरनि।
पुन्य फल अनुभवति सुतहिं बिलोकि कै नँद-घरनि।
सूर प्रभु की उर बसी किलकनि ललित लरखरनि।।3।।

भ्रमर गीत

[भ्रमरगीत के गोपी और उद्धव संवाद में वाग्विदग्धता का विकसित रूप दिखायी देता है। ज्ञान-गरिमा में मण्डित उद्धव को श्रीकृष्ण गोकुल इसलिए भेजते हैं कि वे गोपियों को निराकार की ओर उन्मुख कर सकें। प्रस्तुत अंश के अन्तर्गत गोपियों के प्रत्युत्तरों में वाग्विदग्धता कूट-कूट कर भरी है। सच पूछिए तो वाग्विदग्धता का नाम यही है कि सामने वाले व्यक्ति को ऐसा खरा और चुभता हुआ उत्तर दिया जाय कि उसकी बोलती बन्द हो जाय। साधारण रूप में इसे हम व्यंग्य का बड़ा भाई कह सकते हैं, जो असाधारण लोगों को ही प्राप्त होता है।]

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
हँस-सुता की सुन्दर कगरी, अरु कुञ्जनि की छाँहीं।
वै सुरभी वै बच्छ दोहिनी, खरिक दुहावन जाहीं।
ग्वाल-बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि गहि बाहीं।
यह मथुरा कंचन की नगरी, मनि-मुक्ताहल जाहीं।
जबहिं सुरति आवति वा सुख की, जिय उमगत तन नाहीं।
अनगन भाँति करी बहु लीला, जसुदा नंद निबाहीं।
सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, यह कहि-कहि पछिताहीं।।4।।

बिनु गुपाल बैरिनि भईं कुंजैं।
तब वै लता लगतिं तन सीतल, अब भईं बिषम ज्वाल की पुंजैं।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल-फूलनि अलि गुंजैं।
पवन, पान, घनसार, सजीवन, दधि-सुत किरनि भानु भईं भुंजैं।
यह ऊधौ कहियौ माधौ सौं, मदन मारि कीन्हीं हम लुंजैं।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, मग जोवत अँखियाँ भईं छुंजैं।।5।।

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मनक्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत-सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ सूर तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।6।।

ऊधौ जोग जोग हम नाहीं।
अबला सार-ज्ञान कह जानैं, कैसैं ध्यान धराहीं।
तेई मूँदन नैन कहत हौ, हरि मूरति जिन माहीं।
ऐसी कथा कपट की मधुकर, हमतैं सुनी न जाहीं।
स्रवन चीरि सिर जटा बधावहु, ये दुख कौन समाहीं।
चंदन तजि अँग भस्म बतावत, बिरह-अनल अति दाहीं।
जोगी भ्रमत जाहि लगि भूले, सो तौ है अप माहीं।
सूर स्याम तैं न्यारी न पल-छिन, ज्यौं घट तैं परछाहीं।।7।।

लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि, कैसे छूटत?
कहा कहौं ब्रजनाथ चरित, अन्तरगति लूटत।।
वह चितवनि वह चाल मनोहर, वह मुसकानि मंद-धुनि गावनि।
नटवर भेष नंद-नंदन कौ वह विनोद, वह बन तैं आवनि।।
चरन कमल की सौंह करति हौं, यह सँदेस मोहिं बिष सम लागत।
सूरदास पल मोहिं न बिसरति, मोहन मूरति सोवत जागत।।8।।

कहत कत परदेसी की बात।
मंदिर अरध अवधि बदि हमसौं, हरि अहार चलि जात।
ससि-रिपु बरष, सूर-रिपु जुग बर, हर-रिपु कीन्हौ घात।
मघ पंचक लै गयौ साँवरौ, तातैं अति अकुलात।
नखत, वेद, ग्रह, जोरि, अर्ध करि, सोइ बनत अब खात।
सूरदास बस भईं बिरह के, कर मींजैं पछितात।।9।।

निसि दिन बरषत नैन हमारे।
सदा रहति बरषा रितु हम पर, जब तैं स्याम सिधारे।
दृग अंजन न रहत निसि बासर, कर कपोल भए कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे।
आँसू सलिल सबै भइ काया, पल न जात रिस टारे।
सूरदास प्रभु यहै परेखौ, गोकुल काहैं बिसारे।।10।।

ऊधौ भली भई ब्रज आए।
बिधि कुलाल कीन्हे काँचे घट ते तुम आनि पकाए।
रँग दीन्हौं हो कान्ह साँवरैं, अँग-अँग चित्र बनाए।
पातैं गरे न नैन नेह तैं, अवधि अटा पर छाए।

ब्रज करि अँवा जोग ईंधन करि, सुरति आनि सुलगाए।
फूँक उसास बिरह प्रजरनि सँग, ध्यान दरस सियराए।
भरे सँपूरन सकल प्रेम-जल, छुवन न काहू पाए।
राज काज तैं गए सूर प्रभु, नंद नँदन कर लाए।।11।।

अँखियाँ हरि दरसन की भूखीं।
कैसैं रहतिं रूप-रस राँची, ये बतियाँ सुनि रूखीं।
अवधि गनत, इकटक मग जोवत, तब इतनौ नहिं झूखीं।
अब यह जोग संदेसौ सुनि-सुनि, अति अकुलानी दूखीं।
बारक वह मुख आनि दिखावहु, दुहि पय पिबत पतूखीं।
सूर सु कत हठि नाव चलावत, ये सरिता हैं सूखीं।।12।।

('सूरसागर' से)

अभ्यास प्रश्न

➥ पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

विनय

(क) अब कैं राखि लेहु भगवान।
हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान।
ताकैं डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान।
दुहूँ भाँति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान?
सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान।
सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय-जय कृपानिधान।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पक्षी क्यों नहीं उड़ पा रहा है?
(iv) पक्षी कहाँ बैठा है?
(v) पक्षी ने ईश्वर से क्या निवेदन किया? अन्त में क्या परिणाम हुआ?

(ख) मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।।
जैसैं उड़ि जहाज कौ पच्छी, फिरि जहाज पर आवै।
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै।

परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद में कामधेनु के सन्दर्भ में सूरदासजी ने क्या कहा है?
(iv) गंगा और कुआँ के सन्दर्भ में सूरदास के क्या विचार हैं?
(v) सूरदासजी किसकी महिमा का गान छोड़कर अन्य देवी-देवताओं की उपासना नहीं करना चाहते?

भ्रमरगीत

(ग)

बिनु गुपाल बैरिनि भई कुंजैं।
तब वै लता लगतिं तन सीतल, अब भइँ बिषम ज्वाल की पुंजैं।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल-फूलनि अलि गुंजैं।
पवन, पान, घनसार, सजीवन, दधि-सुत किरनि भानु भईं भुंजैं।
यह ऊधौ कहियौ माधौ सौं, मदन मारि कीन्हीं हम लुंजैं।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस कौं, मग जोवत अँखियाँ भईं छुंजैं।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) गोपियाँ उद्धव से क्या संदेशा भिजवा रही हैं?
(iv) श्रीकृष्ण की उपस्थिति में लताएँ कैसी लगती थीं और अब वे कैसी प्रतीत हो रही हैं?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा रस प्रयुक्त हुआ है?

(घ)

ऊधौ जोग जोग हम नाहीं।
अबला सार-ज्ञान कह जानैं, कैसैं ध्यान धराहीं।
तेई मूँदन नैन कहत हौ, हरि मूरति जिन माहीं
ऐसी कथा कपट की मधुकर, हमतैं सुनी न जाहीं।
स्रवन चीरि सिर जटा बधावहु, ये दुख कौन समाहीं।
चंदन तजि अंग भस्म बतावत, बिरह-अनल अति दाहीं।
जोगी भ्रमत जाहि लगि भूले, सो तौ है अप माहीं।
सूर स्याम तैं न्यारी न पल-छिन, ज्यौं घट तैं परछाहीं।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) भगवान श्रीकृष्ण के सन्दर्भ में गोपियों की क्या धारणा है?

(iv) योग के विषय में गोपियाँ उद्धव से क्या कहती हैं?
(v) गोपियों के अनुसार शरीर की तपन और अधिक क्यों बढ़ जायेगी?

(ङ)

लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि, कैसे छूटत?
कहा कहौं ब्रजनाथ चरित, अन्तरगति लूटत।।
वह चितवनि वह चाल मनोहर, वह मुसकानि मंद-धुनि गावनि।
नटवर भेष नंद-नंदन कौ वह विनोद, वह बन तैं आवनि।।
चरन कमल की सौंह करति हौं, यह सँदेस मोहिं विष सम लागत।
सूरदास पल मोहिं न बिसरति, मोहन मूरति सोवत जागत।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) गोपियों का श्रीकृष्ण से प्रेम कितना पुराना है?
(iv) उद्धव द्वारा गोपियों को दिया गया योग संदेश क्यों व्यर्थ है?
(v) प्रस्तुत पद्य पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(च)

कहत कत परदेसी की बात।
मंदिर अरध अवधि बदि हमसौं, हरि अहार चलि जात।
ससि-रिपु बरष, सूर-रिपु जुग बर, हर-रिपु कीन्हौ घात।
मघ पंचक लै गयौ साँवरौ, तातैं अति अकुलात।
नखत, वेद, ग्रह, जोरि, अर्ध करि, सोइ बनत अब खात।
सूरदास बस भईं बिरह के, कर मींजैं पछितात।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) श्रीकृष्ण गोपियों को क्या वचन देकर गये थे और अब कितना समय बीत गया है?
(iv) गोपियों को किस बात पर पछतावा है?
(v) श्रीकृष्ण के वियोग में गोपियों को रात-दिन कैसे मालूम पड़ रहे हैं?

(छ)

निसि दिन बरषत नैन हमारे।
सदा रहति बरषा रितु हम पर, जब तैं स्याम सिधारे।
दृग अंजन न रहत निसि बासर, कर कपोल भए कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे।
आँसू सलिल सबै भइ काया, पल न जात रिस टारे।
सूरदास प्रभु यहै परेखौ, गोकुल काहैं बिसारे।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) किसके विरह में गोपिकाओं की आँखों में रात-दिन बरसात लगी रहती है?
(iv) गोपिकाओं के हाथ और कपोल क्यों काले हो गये हैं?
(v) प्रस्तुत पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?

(ज)

अँखियाँ हरि दरसन की भूखीं।
कैसे रहतिं रूप-रस गँची, ये बतियाँ सुनि रूखीं।
अवधि गनत, इकटक मग जोवत, तब इतनौ नहिं झूखीं।
अब यह जोग संदेसौ सुनि-सुनि अति अकुलानी दूखीं।
बारक वह मुख आनि दिखावहु; दुहि पय पिबत पतूखीं।
सूर सु कत हठि नाव चलावत, ये सरिता हैं सूखीं।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) श्रीकृष्ण के वियोग में गोपियों का हृदय कैसा हो गया है?
(iv) गोपियों की आँखें किसके लिए व्याकुल हैं?
(v) गोपियाँ उद्धव से क्या निवेदन कर रही हैं?

➥ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
(क) सूर सु कत हठि नाव चलावत, ये सरिता हैं सूखीं।
(ख) कहत कत परदेसी की बात।
(ग) ऊधौ भली भई ब्रज आए।
(घ) परम गंग को छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
(ङ) लरिकाई को प्रेम कहौ अलि कैसे छूटत।
(च) जिहि मधुकर अम्बुज रस चाख्यो, क्यों करील-फल भावै।
(छ) सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।
(ज) जैसैं उड़ि जहाज कौ पच्छी, फिरि जहाज पर आवै।
(झ) हमारैं हरि हारिल की लकरी।
(ञ) मघ पंचक लै गयौ साँवरौ, तातैं अति अकुलात।
2. सूरदास की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. 'सूर सूर तुलसी ससी' उक्ति से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्कपूर्वक अपना मत प्रस्तुत कीजिए।
4. सूरदास का जीवन-परिचय लिखिए।
5. सूरदास का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।
6. सूरदास की भाषा स्पष्ट करते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
7. भ्रमरगीत से क्या तात्पर्य है? उक्त शीर्षक के अन्तर्गत दिये हुए पदों का सार लिखिए।

अथवा सूरदास के भ्रमर-गीत की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

8. सिद्ध कीजिए कि सूर वात्सल्य रस के सम्राट् थे।

अथवा सूर का बाल-लीला वर्णन रेखांकित कीजिए।

अथवा "सूरदास अपने काव्य में वात्सल्य भाव का निरूपण करने में सही अर्थों में 'सूर' थे।" सिद्ध कीजिए।

अथवा सूर के वात्सल्य वर्णन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

9. "सूर की भक्ति में निर्गुण पर सगुण की, निराकार पर साकार की, ज्ञान पर प्रेम की विजय दिखायी गयी है।" स्पष्ट कीजिए।

10. "सूरदास शृंगार रस के महान् कवि हैं।" उदाहरण सहित अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

11. "सूरदास वात्सल्य के कवि हैं।' इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

12. सूरदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों एवं साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

➥ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

2. कृष्ण-प्रेम में तल्लीन गोपिकाओं के जो शब्द-चित्र सूर ने खींचे हैं, उनका संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

3. सूर-साहित्य के भाव-पक्ष का चित्रण कीजिए।

4. सूर के भ्रमरगीत का कथ्य समझाइए।

➥ काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. 'बिनु गुपाल बैरिन भईं कुंजैं' पद में कौन-सा रस है? उपस्थित रस का लक्षण भी लिखिए।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

(क) हमारैं हरि हारिल की लकरी।

(क) मघ पंचक लै गयौ साँवरौ, तातैं अति अकुलात।

●●●